International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 6, November 2022 |

वर्तमान परिदृश्य में पर्यावरण प्रदूषण और भारत

डॉ0 अशोक कुमार शर्मा

सह आचार्य, हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंगापुर सिटी

सार : भारत में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल और राजस्थान ऐसे राज्य है जिसमें वायु प्रदूषण के कारण 50 फीसदी से अधिक मौत हुई है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह हमारे आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहद खतरनाक विषय है, जिसके लिए समय रहते हमें सावधान होना पड़ेगा। हम सभी पर्यावरण प्रदूषण व उनसे होने वाले दुष्प्रभाव से पहले से ही अवगत हैं हम यह भी जानते हैं कि इनका सबसे अधिक असर बच्चों और बूढ़ों पर पड़ता है अक्टूबर 2020 को जारी स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर 2020 की रिपोर्ट के अनुसार वायु प्रदूषण (आउटडोर और इंडोर) के कारण 2019 में जन्मे एक महीने के भीतर ही भारत में एक लाख 16 हजार से अधिक शिशुओं की मृत्यु हो गई थी यह बहुत चिंतनीय विषय है। पर्यावरण के सुधार के लिए जो कदम उठाए जाते हैं उनकी गति के मुकाबले पर्यावरण प्रदूषित होने की गति कई गुना ज्यादा है। भारत के विभिन्न राज्यों में पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए विभिन्न प्रकार के नियम व कानून बनाए गए हैं। फिर भी बहुत ज्यादा परिवर्तन नजर नहीं आता। इस अध्ययन के माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण के मूल कारण को जानने का प्रयास रहेगा। पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए कौन से सुधार उपयोगी होंगे। अध्ययन के बाद परिणाम के रूप में यह स्पष्ट हुआ की जीवन यापन की जरूरतें पूरी करने के साथ हमें जीवनमूल्यों को पहचानने की आवश्यकता है ताकि पर्यावरण प्रदूषण से बचकर हम प्राकृतिक सुख का अनुभव कर सकें। इसलिए शिक्षा के स्तर पर रोजगार उन्मुख के साथ साथ विभिन्न जीवन मूल्यों को सुदृढ़ करने और जीवन को जीने के ढंग को पहचानने की जरूरत है।[1]

मुख्य शब्द :- पर्यावरण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, उद्योग, जीवन मूल्य, शिक्षा।

परिचय :-

पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है जिसमें प्रत्येक सजीव और निर्जीव को गिना जाएगा जो हमारे चारों ओर इस भू-मंडल पर विद्यमान है। आज पर्यावरण का गिरता स्तर सीधे रूप से हम अपने जीवन के हास के रूप में देख सकते हैं। इस गिरते स्तर में हम ना केवल अपने जीवन को बल्कि सभी सूक्ष्म जीव, पेड़-पौधे, नदी, जल, वायु, पर्वतों आदि को भी क्षति पहुंचा रहे हैं। 'यहां पर बहुत सी मानव सभ्यता हैं जो स्वयं को पर्यावरण से अलग नहीं मानती और उनकी नजर में समस्त प्रकृति को एक इकाई के रूप में देखा जाता है और मनुष्य भी इसका का एक हिस्सा है।[2]

मनुष्य ने विज्ञान और तकनीकी के व्यापक प्रयोग से अपनी प्राकृतिक दशा में काफी बदलाव किए हैं मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जाता है 1. प्राकृतिक 2. मानव निर्मित। पर्यावरण का संभालने वाले वनों की कटाई इसका एक बहुत बड़ा कारण है जहां आए दिन हम जंगलों को काट कर उद्योग खड़े कर रहे हैं। हिंदुस्तान टाइम्स में छपे लेख के अनुसार पिछले तीन दशक में मुंबई ने अपने 42 प्रतिशत जंगलों की हानि उठाई है 1988 में जो 29260 हेक्टेयर थी वह 2018 में 16814 हैक्टेयर भूमि ही बची हुई है।[3]

मानव द्वारा धन पाने के लालच और जीवन को आराम देने की स्थिति के लक्ष्य को पाने के लिए प्रकृति साथ छेड़छाड़ ने प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन नष्ट किया है, जिससे प्राकृतिक व्यवस्था पर संकट पैदा हुआ जिन्हें हम पर्यावरणीय समस्याएं कहते हैं जैसे जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण आदि। यह स्थिति और भी भयानक हो जाती है जब पीने के पानी की बात की जाती है। नीति आयोग द्वारा 15 जून 2018 में जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार 60 करोड़ भारतीय जल संकट से गुजर रहे हैं और तीन-चौथाई घरों को पीने का पानी तक नहीं मिलता और 70 प्रतिशत जल दूषित हो जाता है।[4] वायु प्रदूषण का स्तर भी सार्वभौमिक है। इनरडाटा द्वारा जब कार्बन डाइऑक्साइड गैस द्वारा वायु प्रदूषण के प्रमुख कारकों के बारे में 2019 में आंकड़ा दिया गया तो पाया गया कि कुल 2277 मीट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड गैस के उत्सर्जन में (41 प्रतिशत) 933 मीट्रिक टन केवल विद्युत और ताप संयंत्र और (34 प्रतिशत) 714 मिट्रिक टन गैस के उत्सर्जन का कारण उद्योग व कारखाने हैं।'[5]

यह आंकड़े मनुष्य को अपने जीवन शैली के बारे में पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करते है और अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंधन की चर्चा कर रहे हैं।[6]

मनुष्य द्वारा किए जाने वाले इस नुकसान को कम कर सकने के कुछ ऐसे रास्ते भी है क्या जिसमें आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक टकराव ना हो पर्यावरण के गिरते स्तर को सुधार सके। इस बारे में हम क्या करें आज का सर्वाधिक चर्चित विषय है। इस अध्ययन के लिए हम विभिन्न संस्थान द्वारा जारी किए गए द्वितीयक आंकड़ों (सरकारी आंकड़े, शोध अध्ययन और समाचार पत्रों के लेख) का चयन कर यह जानने का प्रयास करेंगे की विभिन्न योजनाओं, नियम और कानून बनाने के बाद भी प्रदूषण का स्तर केवल नाम मात्र ही कम होता है। जबकि उसके बढ़त बहुत तेजी से बढ़ रही है।

स्त्रोत :

भारत सरकार के केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण द्वारा जारी पुस्तिका 2020।[7] प्रति व्यक्ति विद्युत खपत को पूरा करने के लिए जहां 1980 में 15991 kwh (मेगावाट) उत्पादन क्षमता के साथ 55720 kwh (गीगा वाट घंटा) बिजली का उत्पादन किया जाता था। जो कि वर्ष 2020 तक 1280 प्रतिशत बढ़त के साथ 205135 kwh क्षमता तक पहुंचा जिससे 1780 प्रतिशत बढ़त के साथ बिजली का उपयोग 994197 kwh हो गया।

1980 के दशक की शुरुआत में जहां औसतन पंजीकृत होने वाली फर्म की संख्या 15780 प्रति वर्ष थी[8] जोकि 2020 के दशक के अंत तक 874 प्रतिशत वृद्धि के साथ 138000 फर्म पंजीकृत हो रहे हैं। विद्युत ताप संयंत्र और उद्योग कारखाने पर्यावरण के प्रदूषण के दो मुख्य कारक है इनकी इस प्रकार की बढ़त आने वाले समय में और भी भयानक परिणाम पैदा करने के संकेत दे रही हैं।

उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि आर्थिक व सामाजिक तरक्की की गति तो तेजी से बढ़ रही है परंतु हम जितने ज्यादा शिक्षित और सभ्य बनने की दौड़ में आगे बढ़ते गए अपने पर्यावरण को उतना ही अधिक नुकसान भी पहुंचाते गए। हमने विज्ञान और तकनीक के सहारे अपनी समस्याओं और अज्ञान को कम करने का प्रयास करना था । परंतु जितना भी हम आगे बढ़ते गए तो पाया कि आज हमारी समस्या कम होने के स्थान पर और अधिक बढ़ गई। जैसे जीव विज्ञान में ज्ञान पाने की कोशिश यह थी कि अच्छा स्वास्थ्य हम पा लेंगे लेकिन स्वास्थ्य की समस्या तो और भी भयंकर हो गई। कोविड-19 से ज्यादा सटीक उदाहरण और क्या हो सकता है जहां सभी को घर में कैद होना पड़ रहा है और केवल शुद्ध हवा की कमी के चलते न जाने कितने ही अपनों को खोते चले आ रहे हैं। द वायर में छपे एक लेख के अनुसार 2019 में वायु प्रदूषण के कारण भारत में कम से कम 16 लाख 70 हजार लोगों की मृत्यु हुई।[10]

आज लग रहा है कि हम पहले से भी ज्यादा अज्ञानी हो गए। धन कमाने और अच्छा घर बनाने के लिए जिस गति से लोग फैक्ट्री और कारखानों में विभिन्न प्रकार के रसायनों के प्रयोग से अपने धन कमाने का सपना पूरा करने में लगे हैं वहीं दूसरी ओर अपने हवा, पानी और मिट्टी में इतनी अधिकता से रसायनों का प्रयोग कर गए कि हमें जितना आराम कमाना चाहिए था आज उससे कहीं ज्यादा अपने जीवन यापन और रहन-सहन के लिए गुणवत्ता वाली वस्तुएं पाने के लिए दौड़ना पड़ रहा है। हमारी महत्वकांक्षा इतनी बढ़ गई है कि अब हमें अपने पर्यावरण का ख्याल भी नही आता। हवा जहरीली है फिर भी गैर जरूरी चीजों के प्रयोग से उसमें और जहर घोल रहे हैं। हमें पर्यावरण के विस्तृत अध्ययन के साथ-साथ इसे संबंधित व्यवहारिक ज्ञान पर भी बल देना होगा। आज पूरा विश्व पर्यावरण की स्वच्छता की गंभीर चुनौती के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में हमें संवेदनशीलता को सीखना जरूरी हो गया है यदि हम शिक्षा में कुछ सकारात्मक बदलाव ला पाए जिससे कि हम महत्वकांक्षा के वशीभूत ना होकर अपना, अपने परिवार और समाज का, उस में रह रहे विभिन्न सूक्ष्म जीव, पेड़पौधे आदि के प्रति भी संवेदनशील होना होगा। अपने जीवन की रक्षा तभी संभव है जब हम अपने साथ रहने वाले हर जीवमात्र के कल्याण के लिए मिलकर काम करें। ऐसे में यदि हम अपनी परंपरा और संस्कृतियों पर नजर डालें तो ना जाने जीवन को सुखमय बनाने के कितने ही रास्ते हमको मिल सकते हैं। जैसे वसुदेव कुटुंबकम हमें मिल जुल कर रहना सिखाता है ना कि हम अपने आप में जिएं। संपूर्ण मानव सभ्यता पर एक दृष्टि डालें तो पायेंगे कि जब तक प्रत्येक जीव को हम अपने ही जीवन का हिस्सा नहीं मानेंगे तब तक किसी स्थाई समाधान पर पहुंच पाना मुश्किल ही नजर आता है। 'परिस्थितिक तंत्र या परितंत्र पृथ्वी के किसी क्षेत्र में समस्त जैविक और अजैविक तत्वों के अंतरू संबंधित समुच्चय को कहते हैं अतः पर्यावरण तभी एक परितंत्र है।"[11]

ज्यादातर पर्यावरणीय समस्याएं पर्यावरण की हानि और मानव द्वारा संसाधनों के उपभोग में वृद्धि से जुड़ी है 'पर्यावरण अवनयन के अंतर्गत पर्यावरण में होने वाले वह सारे परिवर्तन आते हैं जो अवांछनीय हैं, इसके अंतर्गत प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण, प्राकृतिक आपदाएं इत्यादि शामिल की जाती हैं।[12]

हम अपने स्वयं के हितों के प्रति वशीभूत होकर स्वयं की हित सिद्धि के लिए हम बाकी सभी को अनदेखा करते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं जैसे कमरों को ठंडा करने के लिए वातानुकूलित कमरों में सोने की लालसा पर्यावरण में कितनी गर्मी फैला देते हैं। यह कुछ इसी तरह का प्रयास है कि दूसरे कितनी गर्मी में मरे मुझे चौन से नींद आए। अतः स्वार्थ हम पर इस प्रकार

हावी है कि हम दूसरे का शोषण करने में संकोच करते ही नहीं। दूसरे के दुख में हम सुख अनुभव करते हैं। किस प्रकार की व्यवस्था में हम जीते चले जा रहे हैं जहां किसी दूसरे का शोषण हमें शांति देता है। अपने सुख के साधन एकत्रित करने के चक्कर में पर्यावरण के लिए कितनी मुश्किलें खड़ी कर रही हैं हमें इस ओर ध्यान देकर समझना जरूरी हो गया है। चार्ल्स फुरियर द्वारा कल्पना दी गई थी कि 'हम एक दिन महासागरों को नींबू पानी में बदल देंगे। उस समय उनका मजाक उड़ाया जाता था। नथानिएल हाथोर्न ने अपने उपन्यास 'द ब्लिथेडेल रोमांस' के अध्याय 7 में लिखा कि 'फुरियर की कल्पना को सकारात्मक लेते हुए कल्पना कीजिए कि शहर के घाट इस मनोरम रस को पाने के लिए हर दिन भर जाया करेंगे'।[13] आज स्थिति फुरियर के पक्ष में खड़ी हुई है और कोई भी इस बात को झुठला नहीं सकता।

मनुष्य जीवन यापन की जरूरतें पूरी करने और ऐसी शिक्षा पाने के लिए प्रयासरत है जो उसे आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से लाभ दे जिनसे हम अपने जीवन मूल्यों को अनदेखा करते जा रहे हैं रोजगार उन्मुखी की शिक्षा के साथ-साथ हमें जीवन मूल्य जैसे मानवता, नैतिकता, संवेदनशीलता, परोपकार की भावना, भलाई, सत्य के निकट, आत्म साधना को सीखने के बारे में सोचना होगा। आजीविका के साथ-साथ 'जीवन को जीने के ढंग' की शिक्षा के महत्व को बढ़ाना होगा ऐसे शिक्षण प्रकम भी शुरू करने होंगे जो जीवन मूल्यों को जानने और सीखने में सहयोगी होंगे। रोंडा बर्न की पुस्तक 'द सीक्रेट' में भी तर्क दिया है कि 'प्रकृति हमें वही लौट आती है जो हम इसे देते हैं।[14]

यदि हम केवल जीवन यापन को केंद्रित ना करके जीवन मूल्यों को सीखेंगे और जीवन जीने के ढंग को समझ कर पाने का प्रयास करेंगे तो निसंदेह एक दिन हम प्रकृति और पर्यावरण की आदर्श स्थिति भी पा ही लेंगे।

निष्कर्ष :-

यह अध्ययन हमें पर्यावरण को गंभीर रूप से हानि पहुंचाने वाले कारकों की निरंतर वृद्धि के बारे में जानकारी देता है जिसमें हम प्रति व्यक्ति विद्युत के उपभोग और उसकी आपूर्ति के लिए लगाए जाने वाले विद्युत ताप संयंत्र और औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि को प्रमुख रूप से पर्यावरण प्रदूषण के उत्तरदाई कारक के रूप में चिन्हित करता है। मनुष्य द्वारा आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक हितों की पूर्ति के लिए अंधाधुंध रूप से पर्यावरण को हानि पहुंचाए जाने के लिए मूलभूत कारण के रूप में चिन्हित करता है। हमें अपने आर्थिक और राजनीतिक लक्ष्यों के साथ साथ जीवन मूल्य के महत्व को समझने और जानने के लिए शिक्षा के स्तर प्राथमिकता के तौर पर बदलाव लाने के पक्ष में ले जाता हैं। यदि हम अपने जीवनयापन के साथ ही जीवन मूल्यों को भी प्राथमिकता के तौर पर समझे और उन पर काम करें तो पर्यावरण प्रदूषण के लिए स्थाई और बिना रुके चलने वाले प्रयास की संभावना की ओर संकेत करता है।

संदर्भ सूची :-

1. Kiran Pandey. (23 Dec 2020) Air pollution: Half of India's death toll in these 5 states. Down To Earth, Latest news, opinion, analysis on environment & science issues | India, South Asia. https://
2. www.downtoearth.org.in/news/air/air-pollution/half of/india//death/toll/in/ these.5/states. 74768 Jamieson, Dale. (2007) The Heart of Environmentalism. In R. Sandler & P. C. Pezzullo. Environmental Justice and Environmentalism. (pp. 85-101). Massachusetts Institute of Technology Press.
3. Badri Chatterjee. (27 July 2020) 42.5% decline in Mumbai's urban green cover over 30 years' Hindustan Times.https://www.google.com/amp/s.www.hindustantimes.com/mumbai-news/42-5-decline-in-mumbai- s-urban-green-cover/story-luHgllrej P2nUOWEA9YFTP-amp.html
4. See how Indian states fared on the water index (2018, June 15). Down To Earth | Latest news, opinion, analysis on environment & science issues | India, South Asia. https://www.downtoearth.org.in/news/water/ see-how-indian-states-fared-on-the-water-index-60868
5. Anshul Joshi. (26 November 2019). India accounts for the highest number of deaths among G20 nations due to air pollution. ETEnergyworld.com. https://energy.economictimes.indiatimes.com/news/power/india- accounts-for-the-highest-number-of-deaths-among-g20-nations-due-to-air-pollution/72234587
6. Suresh Lal Srivastava. (March 2009) Pratiyogita Darpan.

7. Power sector at a glance ALL INDIA | Government of India | Ministry of power. (n.d.). Welcome to Government of India | Ministry of Power- https://powermin.gov.in/en/content/power-sector-glance-all- india.
8. Rajeswari Sengupta, Manish Singh. (01 April 2019) Firm formation in India: The last 40 years. Ideas For India. https://www.ideasforindia.in/topics/macroeconomics/firm-formation-in-india-the-last-40-years.html
9. 1.38 lakh new companies registered in India in pandemic year: Govt. (2021, March 22). Google. https:// www.google.com/amp/s/www.timesnownews.com/amp/business-economy/economy/article/1-38-lakh- new-companies-registered-in-india-in-pandemic-year-govt/735722
10. The wire staff. (2020, October 22). Almost 1.7 million people had died due to air pollution in India: a study. The Wire-Hindi. https://www.google.com/amp/s/m.thewirehindi.com/article/more-than-16-lakh- deaths-due-to-air-pollution-in-india-in-2019-study/144540/amp
11. Savinder Singh (2005) Jave Bhugol. Prayag pustak bhawan, Allahabad.
12. Johnson, D.L., S.H. Ambrose, T.J. Bassett, M.L. Bowen, D.E. Crummey, J.S. Isaacson, D.N. Johnson, P. Lamb, M. Saul, and A.E. Winter-Nelson. (1997) Meanings of environmental terms. Journal of Environmental Quality 26: 581-589.
13. Nathaniel Hawthome. (1852) The Blithedale Romance. Ticknor and Fields. p. 166.
14. Rhonda Byrne. (2006) The Secret. Atria Books, Beyond Words Publishing